नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

एनालॉग पनीर : प्रतिबंध के साथ निगरानी जरूरी

मध्य प्रदेश में वनस्पति वसा और अन्य सामग्री से तैयार होने वाले एनालॉग पनीर के उत्पादन, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का सरकार का निर्णय स्वागत योग्य है. दूध से बने वास्तविक पनीर के विकल्प के रूप में तैयार किए जाने वाले ऐसे उत्पादों को लेकर उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और खाद्य पदार्थों की शुद्धता से जुड़े सवाल लगातार उठते रहे हैं. महाराष्ट्र, गुजरात और छत्तीसगढ़ के बाद मध्य प्रदेश का यह कदम खाद्य सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है. लेकिन केवल प्रतिबंध की घोषणा कर देना पर्याप्त नहीं होगा. असली चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि प्रतिबंधित एनालॉग पनीर बाजार में बिके ही नहीं.

सरकार को प्रतिबंध लागू करने के लिए प्रभावी निगरानी व्यवस्था बनानी होगी. बाजार, होटल, रेस्टोरेंट, ढाबों, मिठाई की दुकानों और खाद्य पदार्थों के थोक विक्रेताओं की नियमित जांच होनी चाहिए. केवल शिकायत मिलने पर कार्रवाई करने के बजाय विभाग को सक्रिय निगरानी तंत्र विकसित करना होगा. यदि प्रतिबंध के बावजूद एनालॉग पनीर बाजार में उपलब्ध रहता है तो इससे सरकारी निर्णय की प्रभावशीलता पर ही प्रश्न उठेंगे.

यह मामला केवल पनीर तक सीमित नहीं है. खाद्य पदार्थों में मिलावट देशभर में एक गंभीर चुनौती है. दूध, मावा, घी, तेल, मसाले, मिठाइयां और अन्य खाद्य पदार्थों की शुद्धता की नियमित जांच आवश्यक है. त्योहारों के समय होने वाली औपचारिक कार्रवाई के बजाय पूरे वर्ष निरंतर निगरानी होनी चाहिए. मिलावटखोरों के खिलाफ ऐसी कठोर और त्वरित कार्रवाई जरूरी है, जिससे कानून का भय पैदा हो और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वालों को संरक्षण न मिले. इसके लिए सबसे पहले खाद्य पदार्थों की शुद्धता जांचने वाली प्रयोगशालाओं की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है. कई बार नमूने लेने के बाद उनकी जांच और रिपोर्ट आने में समय लग जाता है. यदि जांच की क्षमता सीमित रहेगी तो व्यापक निगरानी संभव नहीं होगी. सरकार को आधुनिक तकनीक से लैस प्रयोगशालाएं स्थापित करने के साथ मौजूदा प्रयोगशालाओं की क्षमता भी बढ़ानी चाहिए. आवश्यकता पड़ने पर खाद्य सुरक्षा अधिकारियों और जांच कर्मचारियों की संख्या में भी वृद्धि की जानी चाहिए.

साथ ही, नमूना लेने की प्रक्रिया को पारदर्शी और वैज्ञानिक बनाया जाना चाहिए. जिन क्षेत्रों या प्रतिष्ठानों से बार-बार मिलावटी खाद्य पदार्थों के नमूने मिलते हैं, वहां विशेष निगरानी रखी जा सकती है. डिजिटल माध्यम से निरीक्षण, नमूना और जांच की पूरी प्रक्रिया की निगरानी भी व्यवस्था को अधिक प्रभावी बना सकती है.

एनालॉग पनीर पर प्रतिबंध निश्चित रूप से सही दिशा में उठाया गया कदम है, लेकिन इसकी सफलता बाजार में इसके वास्तविक अनुपालन से तय होगी. सरकार को यह संदेश स्पष्ट करना होगा कि खाद्य पदार्थों की शुद्धता के साथ समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा. प्रतिबंध, नियमित निरीक्षण, पर्याप्त प्रयोगशालाएं, सक्षम कर्मचारी और मिलावटखोरों के खिलाफ कठोर कार्रवाई, इन सभी को एक साथ आगे बढ़ाकर ही प्रदेश के नागरिकों को सुरक्षित और शुद्ध खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए जा सकते हैं. दरअसल, शुद्ध खाद्य पदार्थ उपलब्ध हों यह सुनिश्चित करने का काम शासन और प्रशासन का है. सरकार को लगातार सजग रहकर मिलावट माफिया के खिलाफ कार्रवाई करनी होगी.

सत्ता और विपक्ष दोनों ने आगामी चुनावी चुनौतियों की तैयारी शुरू कर दी है

मप्र की भावी राजनीति : 2028 की तैयारी और नए समीकरण

संजीव शर्मा

मध्यप्रदेश की राजनीति इन दिनों कई ऐसे घटनाक्रमों की साक्षी बनती जा रही है, जो आने वाले दो वर्षों की राजनीतिक दिशा तय करेगी. दतिया विधानसभा उपचुनाव का परिणाम, कांग्रेस का संगठनात्मक पुनर्गठन, भारतीय जनता पार्टी की समीक्षा बैठकों का दौर और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की निवेश केंद्रित सक्रियता के साथ ही प्रशसनिक मशीनरी संग जनता के साथ संवाद ये सभी घटनाएं अलग-अलग नहीं, बल्कि एक बड़े राजनीतिक परिदृश्य का हिस्सा प्रतीत हो रही हैं. इन घटनाओं से स्पष्ट है कि प्रदेश में सत्ता और विपक्ष दोनों ने आगामी चुनावी चुनौतियों की तैयारी शुरू कर दी है.

> आने वाले महीनों में यदि दोनों दलों की यह सक्रियता इसी गति से जारी रहती है, तो मध्यप्रदेश की राजनीति और अधिक प्रतिस्पर्धी हो सकती है. संगठन, स्थानीय नेतृत्व, जनसंपर्क और विकास के मुद्दे राजनीतिक विमर्श के केंद्र में रहेंगे. फिलहाल इतना तय है कि दतिया उपचुनाव के बाद शुरू हुई राजनीतिक हलचल ने प्रदेश की राजनीति को नई दिशा देने का काम किया है और इसके प्रभाव आने वाले चुनावी दौर में स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकते हैं.

दतिया विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस की जीत ने प्रदेश की राजनीति में नई चर्चा छेडी है. लंबे समय बाद कांग्रेस को ऐसा अवसर मिला है, जिसे वह केवल एक सीट की जीत नहीं, बल्कि कार्यकर्ताओं के मनोबल में बढ़ोतरी के रूप में पेश कर रही है. कांग्रेस आलाकमान का मानना है कि यदि संगठन को नए सिरे से मजबूत किया जाए और स्थानीय मुद्दों पर लगातार संघर्ष किया जाए तो भविष्य में बेहतर परिणाम मिल सकते हैं.

इसी सोच के तहत कांग्रेस ने प्रदेश, जिला और ब्लॉक स्तर पर कई संगठनात्मक इकाइयों और प्रकोष्ठों को भंग कर पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरू कर दी है. यह कदम केवल बदलाव नहीं, बल्कि नए नेतृत्व को अवसर देने और संगठन को सक्रिय बनाने की रणनीति का अहम् हिस्सा है. पार्टी अब ऐसे पदाधिकारियों को आगे लाने की कोशिश कर रही है, जो मैदान में सक्रिय हों और जनता से सीधा संवाद बनाए रखें. दूसरी ओर, भाजपा ने उपचुनाव के परिणाम को गंभीरता से लिया है. प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने हार के कारणों की समीक्षा के दौरान अनुशासनहीनता पर सख्ती की बात कही है. पार्टी का संगठन बूथ स्तर तक फीडबैक जुटा रहा है और यह समझने की कोशिश में है कि किन कारणों से अपेक्षित परिणाम नहीं मिल सके. भाजपा का प्रयास है कि किसी भी स्थानीय असंतोष को समय रहते दूर किया जाए, ताकि आगामी चुनावों में उसका असर न दिखाई दे.

इसी बीच मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने छिन्दवाड़ा से जन विश्वास अभियान की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य संवाद के माध्यम से जनता की बात सुनना, समाधान के जरिए भरोसा कायम करना और सुशासन को जमीन तक पहुंचाना है. यह अभियान 7 अगस्त से शुरू हुआ है जो अगले साल 8 जनवरी तक चलने वाला है. इस प्रकार जनता के भरोसा कायम रखने के साथ ही वह विकास और निवेश एजेंडे को राष्ट्रीय मंचों पर लगातार आगे बढ़ा रहे हैं. हाल के दिनों में उन्होंने ऊर्जा, उद्योग और निवेश से जुड़े कार्यक्रमों में मध्यप्रदेश की संभावनाओं को प्रमुखता से रखा है. उनका प्रयास है कि जन सरोकार,निवेश, रोजगार और अधोसंरचना विकास को राजनीतिक विमर्श का प्रमुख विषय बनाया जाए. उधर,भाजपा मानती है कि विकास आधारित राजनीति उसके लिए सबसे बड़ा चुनावी आधार बन सकती है.

हालांकि विपक्ष सरकार को केवल निवेश घोषणाओं तक सीमित नहीं रहने देने की कोशिश कर रहा है. कांग्रेस जल जीवन मिशन, किसानों की समस्याओं, बेरोजगारी, महंगाई और स्थानीय विकास कार्यों जैसे मुद्दों पर सरकार को लगातार घेर रही है. विपक्ष का मानना है कि यदि जनसरोकारों से जुड़े मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाया जाए तो राजनीतिक लाभ मिल सकता है.

प्रेक्षकों के अनुसार, वर्तमान घटनाक्रमों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि दोनों प्रमुख दल अब 2028 के विधानसभा चुनाव की दीर्घकालिक तैयारी में जुट चुके हैं. भाजपा सत्ता में रहते हुए विकास और सुशासन को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाना चाहती है, जबकि कांग्रेस संगठन को मजबूत कर जनता के बीच अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने की रणनीति पर काम कर रही है.

(लेखक नवभारत डिजिटल के संपादक हैं)

एमएसएमई तंत्र

मजबूत करने के लिए सुधारों का अगला चरण

जीतन राम मांझी

> यह संशोधन उद्यमों के लिए अनुपालन के प्रति अधिक संतुलित और विश्वास आधारित दृष्टिकोण की दिशा में बदलाव को भी दर्शाता है. छोटे-मोटे उल्लंघन के लिए अब पहली बार में केवल चेतावनी दी जाएगी और अपराध दोहराए जाने पर अलग-अलग आर्थिक जुर्माने लगाए जासकते हैं. नियमों के पालन की प्रक्रिया को ज़्यादा अनुमान लगाने लायक और आसान बनाकर, कंपनियाँ अब अपनी ऊर्जा अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने पर लगा सकती हैं. इससे व्यवसाय करने में सुगमता (ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस) और विश्वास-आधारित शासन को बढ़ावा मिलेगा. आखिर में, यह संशोधन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में विश्वास का एक प्रतीक है, जो उन्हें नवाचार करने, रोज़गार पैदा करने, नए बाज़ारों में प्रवेश करने और अधिक प्रतिस्पर्धी बनने में सक्षम बनाएगा. एक अधिक मजबूत और गतिशील एमएसएमई क्षेत्र 'विकसित भारत' के लक्ष्यों को प्राप्त करने मंर अहम भूमिका निभाएगा.

संसद के दोनों सदनों द्वारा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास (संशोधन) विधेयक, 2026 का पारित होना, एमएसएमई के लिए भारत के कानूनी ढांचे को तेज़ी से बदलते तंत्र के अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है. मूल अधिनियम के बाद से पिछले दो दशकों में, लाखों उद्यम औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बने हैं और एमएसएमई राष्ट्रीय विकास, निर्यात और रोज़गार सृजन में अहम योगदान देने वाले बन गए हैं. इस संशोधन का उद्देश्य एमएसएमई इकोसिस्टम को ज़्यादा संवेदनशील और भरोसे पर आधारित बनाना है. इससे पंजीकरण आसान होगा, वर्गीकरण बेहतर होगा, ऋण तक पहुंच और समय पर भुगतान आसान होगा, विवादों का निपटारा डिजिटल और तेज़ होगाऔर नियमों का पालन आसान होगा.

इस संशोधन में उद्यमों के मुफ्त और स्वैच्छिक पंजीकरण के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रावधान किया गया है. इससे कई तरह की बाधाएं दूर होंगी और सरकार को बेहतर तरीके से लाभ पहुंचाने में भी मदद मिलेगी. अधिनियम के तहत पंजीकरण एक पात्रता है, जिसका दावा कोई भी कंपनी कर सकती है, यह कोई बाध्यता नहीं है. यह संशोधन संयंत्र, मशीनरी या उपकरणों में निवेश और कारोबार के संयुक्त मानदंडों के आधार पर उद्यमों के वर्गीकरण के लिए एक स्पष्ट फ्रेमवर्क प्रदान करता है. इस वर्गीकरण से फ्रेमवर्क को प्रौद्योगिकी, लागत, बाजार और व्यवसाय मॉडल में आने वाले बदलावों के अनुसार तेज़ी से ढाला सकता है और यह केंद्र सरकार को अधिसूचना के माध्यम से इसकी सीमाओं को निर्धारित करने का अधिकार देता है.

ज़्यादातर एमएसएमई के लिए सबसे बड़ी चिंता नियमित नकद प्रवाह की होती है, क्योंकि किसी छोटे उद्यम का एक भी भुगतान न मिलने का व्यापक असर कर्मचारियों के समय पर वेतन, कच्चे माल की खरीद और अगले ऑर्डर को स्वीकार करने पर पड़ता है, जिससे भुगतान में देरी होने से कंपनी के काम करने और आगे बढ़ने की क्षमता पर बुरा असर पड़ सकता है. इसलिए इस संशोधन में इस समस्या को तीन चरणों-रोकथाम, समाधान और कार्यान्वयनके माध्यम से दूर करने की कोशिश की गई है.

रोकथाम: यह केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के लिए 'ट्रेड्स' (टीआरइडीएस) के माध्यम से एमएसएमई से संबंधित रसीद (इनवॉइस) के भुगतान और जानकारी देने को अनिवार्य बनाकर पारदर्शिता लाता है. राज्य सरकारें भी यही नियम अपने राज्य के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों पर लागू कर सकती हैं. भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित एक डिजिटल प्लेटफॉर्म होने के नाते, 'ट्रेड्स' एक स्वीकृत इनवॉइस के आधार पर बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों से तुरंत वित्तपोषण प्राप्त करने की सुविधा देता है. इससे आपूर्तिकर्ता को अग्रिम भुगतान मिल जाता है, जबकि खरीदार तय तिथि पर बैंक या वित्तीय संस्थान को भुगतान चुकता करता है. इस प्रकार, रिसिवेबल्स (मिलने वाली रकम) आपूर्तिकर्ता के लिए लिक्विडिटी का ज़रिया बन जाता है, जिससे कंपनी को अपने कामकाज का प्रबंधन करने, बिलों का भुगतान करने और व्यवसाय को आगे बढ़ाने में आसानी होती है.

समाधान: यह इस अधिनियम के विवाद-समाधान फ्रेमवर्क को और अधिक मजबूत करता है. यह राज्य सरकारों को मध्यस्थता और सुलह के लिए अतिरिक्त 'सूक्ष्म और लघु उद्यम सुविधा परिषदों' (एमएसइएफसी) की स्थापना करने में सक्षम बनाता है. यह मध्यस्थता और सुलह के लिए समय-सीमा निर्धारित करता है तथा ऑनलाइन विवाद-समाधान को वैधानिक मान्यता प्रदान करता है. इससे मामलों का तेजी से निपटारा होगा और एक ऐसी व्यवस्था तैयार होगी जिससे कंपनी प्रक्रिया और समय-सीमा की निश्चितता के साथ अपने जायज़ दावों को पेश कर सकेगी.

कार्यान्वयन: 'सुविधा परिषदों' द्वारा दिए गए निर्णय के तहत मिलने वाली रकम को ज़मीन के लगान की बकाया राशि की तरह वसूला जा सकता है.

(लेखक केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री हैं.)

आतंकी साजिश के साये में सेना व पुलिस की वर्दी

देश में आतंकवाद अब कई अन्य रूपों में सामने आ रहा है. इसमें सेना तथा पुलिस की वर्दी भी अब आतंकवादियों तथा गैर कानूनी काम करने वालों के निशाने पर है. हाल में राजस्थान के श्रीगंगानगर में आर्मी इंटेलिजेंस ने पुलिस के साथ मिलकर बड़े पैमाने पर इस साजिश को पकड़ा. यहां के स्टेशन रोड तथा गोल बाजार में करीब एक दर्जन दुकानों पर छापेमारी की गई और बरामदगी में एक हजार मीटर से अधिक ऐसा कपड़ा मिला, जो सेना की नई डिजिटल कॉम्बेट यूनिफार्म की नकल था. इतना ही नहीं ऐसे जूते, टोपी, बेल्ट, फीते आदि भी बरामद हुए जिन्हें सेना प्रयोग करती है. सेना ने इसे सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा माना. चिंता की बात यह है कि यह क्षेत्र पाकिस्तान से जुड़ी सीमा का है. समझा जा सकता है कि वर्दी की आड़ में आतंक का पैंतरा चलने की चाल चली जा रही है. वर्दी चाहे पुलिस की हो, आर्ड फोर्स की हो या फिर अन्य सुरक्षा बलों की हो सभी के प्रति आम जनता में सम्मान है. इसकी उपस्थिति ही सुरक्षा की गारंटी मानी जाती है. आतंकवादी लंबे समय से इसी का लाभ उठा रहे हैं. पुलवामा, पठानकोट, पहलगाम, नगरोटा, कठुआ, सांबा, राजौरी तथा पुंछ की घटनाएं हों या फिर कालूचक नरसंहार, उरी और सुंजवां का मामला, सभी में यह बात सामने आई कि आतंकवादियों ने सेना या पुलिस की वर्दी का उपयोग किया. सुरक्षा घेरे को चकमा देने तथा अपनी पहचान छिपाने के लिए इस तरह की घटनाएं हुईं तो सेना ने 2023 में नई डिजिटल पैटर्न कॉम्बेट यूनिफार्म लागू की. रक्षा मंत्रालय ने इसकी नकल को बाजार में बेचने पर रोक लगाई और कहा कि यह अपराध की श्रेणी में आएगा. इसके बाद भी देश में इस तरह का कपड़ा आसानी से मिल रहा है. दिल्ली में ही आजाद नगर, महालक्ष्मी मार्केट इसके केंद्र बने हैं. देशभर में सैन्य छावनी क्षेत्र में अधिकृत दुकानों के अतिरिक्त दूसरी दुकानों पर यह जब आसानी से मिल रहा है, तो आतंकवादियों को इसे खरीदने में कोई परेशानी नहीं हो रही. पंजाब, राजस्थान, गुजरात तथा बिहार के उन क्षेत्रों में तो खतरा और अधिक है. यहां पर दूसरे देशों की सीमा से इन वर्दियों की बदौलत घुसपैठिए घुस रहे हैं.

- मनोज वार्ष्णेय

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जब तक है दुनियादारी हर किसी पर जिम्मेदारी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हम जिम्मेदारियों का बोझ उठाते-उठाते थक गए हैं. सोचते हैं कि अपनी रिस्पॉन्सिबिलिटी का बोझ किसी और पर डाल दें.'

हमने कहा, 'ऐसा नहीं चलेगा. जब तक आपका नाम एसआईआर से कटकर मतदाता सूची से बाहर नहीं हो जाता, आप एक रिस्पॉन्सिबल सिटीजन या जिम्मेदार नागरिक बने रहेंगे. जिम्मेदारियां कभी खत्म नहीं होतीं. श्रवण कुमार ने जिम्मेदारी के साथ अपने माता-पिता को कांवड़ में बिठाकर तीर्थयात्रा करवाई थी. आज भी कांवड़िया अपने कंधे पर कांवड़ लादकर धूमधाम से गंगाजल लाते हैं. प्रधानमंत्री के कंधे पर पूरे देश की जिम्मेदारियों का बोझ है. ऊपर से विपक्ष चाहता है कि सरकार जंतर-मंतर पर गोली चलाने की रिस्पॉन्सिबिलिटी भी अपने ऊपर ले. मोदी और शाह पर आखिर कितना दबाव डाला जाएगा?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमें दूसरों से मतलब नहीं है. हम अपनी जिम्मेदारियों से बचना चाहते हैं.' हमने कहा, 'जब तक दुनियादारी है, तब तक जिम्मेदारी भी है. जमादार से लेकर जमींदार तक अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं. बड़े-बड़े उद्योगपतियों से भी कहा जाता है कि सीएसआर यानी कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी निभाओ. इसका मतलब है कि पहले जिम्मेदारी से बिजनेस करते हुए बहुत बड़ी कंपनी अर्थात कॉरपोरेट बनाओ फिर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाओ. अपने मुनाफे का एक हिस्सा समाज कल्याण के कार्यों में खर्च करो. तुमने समाज से कमाया तो समाज को दो. इससे जिम्मेदारी और वफादारी दोनों निभजाती है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, कितने ही लोग निष्क्रय या निठल्ले बने रहते हैं. उनका रवैया ऐसा रहता है- अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम, दास मलूका कह गए सबके दाता राम!'

हमने कहा, 'अब आप समझ गए होंगे कि तथाकथित जिम्मेदार लोगों ने राममंदिर का चंदा या चढ़ावा कैसे चुराया. धर्म के नाम पर धंधा करने वालों की जमात सामने आ गई. आज धर्म और राजनीति का घालमेल हो गया है, महंगाई, बेरोजगारी जनता का तेल निकाल रही है. इतनी ज्यादा डिफिकल्टी बढ़ गई कि पेपर लीक के खिलाफ आंदोलन करना युवाओं की रिस्पॉन्सिबिलिटी बन गई.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12349 - डॉ. सागर खादीवाला

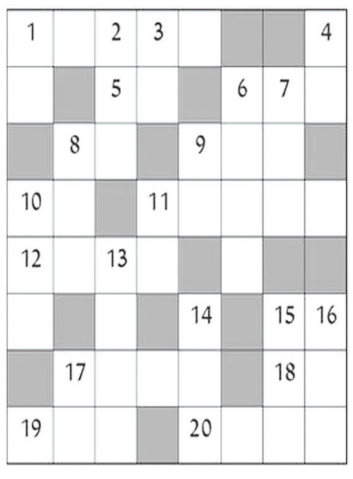

कंद के रूप में पैदा होती है 2. दमन किया हुआ 3. राय, सम्मति, वोट, न, नहीं 4. व्यथा, दर्द, शारीरिक या मानसिक कष्ट 6. पलकों का खुलना और बंद होना 7. गंदे पानी की निकासी का मार्ग (अं.) 8. पूजा करने वाला 9. संपत्ति, धन, दौलत 10. नमूना 11. पूरब (सं.) 13. भीगा हुआ, तर सना हुआ 14. अनाथ 15. हिम्मत, हौसला 16. सहायता 17. स्वयं, खुद, आदरसूचक संबोधन

बाएं से दाएं
1. आनंद से भरा हुआ, आनंदपूर्ण 5. अल्प, थोड़ा 6. कलह, तकरार, लड़ाई 8. पुत्र 9. निरा, एकदम 10. प्रसिद्ध शिकारी पक्षी 11. किसी व्यक्ति को आदेश आदि देने का अधिकार देना (सं.) 12. नकल करने वाला 15. चार वेदों में से तीसरा वेद 17. अपने ऊपर बीतने या गुजरने वाली घटना अथवा बात 18. सीमा, मर्यादा 19. कसम, सौगंध 20. अभिप्राय, मनोरथ (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. एक प्रसिद्ध सब्जी जो जमीन में

Solution 12348

भू	मि	कं	प	न	■	न	क
त	क	■	ट्ठ	■	सु	ख	द
ल	दा	न	■	■	वि	रा	म
■	र	ज	नी	गं	धा	■	■
बूं	■	ला	ल	■	■	था	प
दा	सी	■	कं	ग	न	■	रि
बां	■	म	ठ	■	क	पा	स
दी	क्षि	त	■	ज	ल	क	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, आर्थिक हानि होगी. भूमि भवन संबंधी मामलों में विवाद होगा. भावुकता में कोई भी निर्णय न करना हितकर रहेगा. क्रोध पर नियंत्रण रखें. वर्ष के मध्य में सुखद यात्रा का योग है. स्थाई लाभ की योजना बनेगी. मित्र या भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में मित्रों से बौद्धिक विचार विमर्श होगा. सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी. लेखनादि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की सुखद यात्रा का योग है. स्थाई लाभ की योजना बनेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की आर्थिक गृहकार्यों में व्यस्तता रहेगी. सिंह राशि केव्यक्तियों का भूमि भवन आदि संबंधी कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी. मित्रों से बौद्धिक विचार विमर्श होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यापार में लाभ होगा. मित्रों व भाईयों से सहयोग बना रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को क्रोध से बचना चाहिये. कर्क राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को यात्रा में सावधानी रखनी चाहिये.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुंदर, लगनशील, स्वस्थ्य एवं कोमल हृदय का होगा, मधुरभाषी होगा, इनके मित्रों की संख्या सीमित होगी, यात्रा एवं मनोरंजन में विशेष रूचि रहेगी. ये अपने कार्यों में किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करेगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

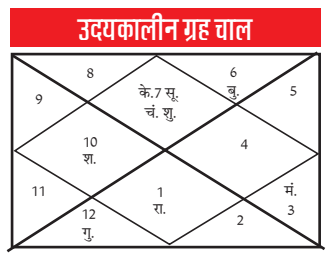

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल द्वितीया भृगुवासरे रात 8/11, मघा नक्षत्रे प्रात: 6/46, परिघ योगे दिन 12/33, बालव करणे सू.उ. 5/32, सू.अ. 6/28, चन्द्रचार सिंह, पर्व- चन्द्रदर्शन, शु.रा. 5, 7, 8, 11, 12, 3 अ.रा. 6, 9, 10, 1, 2, 4 शुभांक- 7, 9, 3.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल द्वितीया को मघा नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां में घटबढ के बाद नरमीं का रूख रहेगा, गेहूं, जौ, चना, जूट, पाट, बारदाना देशी घी, सरसों में मंदी की चाल चलेगी, वायदा विचार आज 1 बजकर 30 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 5667 है.

मेष- आप अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, लाभ के नये मार्ग खुलेंगे, मिलन होगा, सुख संतोष बना रहेगा.

वृषभ- अधिकारी आपकी कार्यशैली से प्रसन्न होंगे, नियमित दिनचर्या रहेगी, इष्ट मित्रों का सहयोग रहेगा, मांगलिक कार्यों में खर्च की अधिकता रहेगी.

मिथुन- उत्तराधिकार संबंधी समस्या हल होने से राहत मिलेगी, घरेलू आवश्यकताएं की पूरी करने दौड़धूप करना पड़ेगा, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

कर्क- दूसरों के दबाव में लिए फैसले मौका मिलते ही बदल देंगे, मित्र वर्ग उत्साहवर्धक सहयोग करेगा, जायजाद प्रापर्टी आदि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी. संयम रखें.

सिंह- व्यापारिक समझौते भाग्योदय में सहायक रहेंगे, मन की बात करीबी से कहने पर तनाव कम होगा, किये गये प्रयासों में लाभ प्राप्त होगा. नए उपक्रमों का विकास होगा.

कन्या- वैवाहिक चर्चाओं में सफलता के आसार हैं, आपके बढ़ते प्रभाव से लोग ईर्ष्या करेंगे, परीक्षा प्रतियोगिता में परिश्रम अधिक करना होगा, उत्तम परिणाम प्राप्त होगा.

तुला- जोड़तोड़ करके काम कराने के चक्कर में नुकसान होगा, न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी, आशा से अधिक परिश्रम करने पर लाभ होगा.

वृश्चिक- युवाओं को काम की तलाश में भटकना पड़ेगा, अपने काम को लेकर ज्यादा गंभरी होंगे, सरकारी विभाग में रूके कार्यों के बनने का योग है.

धनु- बढ़ते खर्च को पूरा करने में कठिनाई आयेगी, कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है, कामकाज के प्रति अरूचि एवं उदासीनता रहेगी, सोचे हुए कार्यों में बाधा आयेगी.

मकर- बिना सोचे समझे नए काम में हाथ न डालें, लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है, भाग्यवर्धक शुभ समाचार प्राप्त होगा, धार्मिक कार्य में रूचि रहेगी.

कुम्भ- अपने संपर्कों से रूके काम निकालने में सफल होंगें यात्रा का योग है. राजकीय प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी.

मीन- जिद्दी रवैया तरक्की की राह में बाधक होगा, समाज में आपके कार्य की पहचान बनेगी, नए संबंधों में मैत्री संबंध महत्वपूर्ण रहेंगें.

SUDOKU 7481

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7480

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7